सांध्य दैनिक **4PM**

सफलता एक घटिया शिक्षक है। वह लोगों में यह सोच विकसित कर देता है कि वो असफल नहीं हो सकते।
–बिल गेट्स

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 230 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 28 सितम्बर, 2026

तिरुवनंतपुरम में कोहली ने लगाई... 7 | महाराष्ट्र में सूखे पर गरमाई... 3 | भाजपा के भ्रष्टाचार ने शहरों में... 2

सड़क पूछ रही थी हिसाब, कैमरा घूमा तो चल गया हाथ?

मोदी के मंत्री मारते हैं थप्पड़

सिर्फ थप्पड़ नहीं बल्कि विवादों की एलबम से भरी पड़ी है मोदी सरकार

» दिल्ली सरकार में पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा के इस्तीफे की मांग से गरमाई सियासत

» कर्नल सोफिया कुरैशी पर विवादित टिप्पणी, जनरेशन गटर के बाद सीधे मार दिया थप्पड़

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। खस्ताहाल दिल्ली की तस्वीर दिखाने के लिए दिल्ली के एक लड़के ने जिम्मेदार मंत्री प्रवेश वर्मा को जब आईना दिखाने की कोशिश की तो माननीय मंत्री जी ने बेचारे जेन जी युवक को थप्पड़ रसीद कर दिया। यह वही जेन जी है जिसके वोटों को हासिल करने के लिए सरकार समय-समय पर घड़ियाली आंसू बहाते नहीं थकते। कैमरा ऑन था। मंत्री प्रवेश वर्मा सड़क का निरीक्षण कर रहे थे।

आम आदमी पार्टी के विधायक जरनैल सिंह और उनके साथ मौजूद लोग सड़क की गुणवत्ता पर सवाल उठा रहे थे। सड़क की ऊपरी परत का हिस्सा हाथ से निकलकर सामने आ रहा था। फिर कैमरा मंत्री की तरफ घूमता है मंत्री युवक का मोबाइल नीचे करते हैं और अगले ही पल थप्पड़ का वीडियो सोशल मीडिया पर दौड़ पड़ता है। बस यहीं से सड़क का मामला पूरे देश की सियासत मामला बन गया क्योंकि सड़क दिल्ली की हो सड़क पंजाब की हो या फिर सड़क यूपी की सभी जगह हाल बेहाल है। एक्सप्रेसवे उधड़ रहे हैं और आम जनता जब इस तस्वीर को जिम्मेदार लोगों तक पहुंचाने की कोशिश करते हैं तो पीटे जाते हैं।

मुझे डिटेन कर लिया गया

साहिब सिंह के मुताबिक उसे डिटेन भी कर लिया गया थ। उन्होंने बताया कि हमें यहां से काफी दूर एक जगह पर ले जाया गया। मुझे लगता है वह जगह यहां से डेढ़ से दो घंटे की दूरी पर थी। उसके बाद हमें वहां रात में बारह से एक बजे तक रखा गया और फिर फ्री किया गया। डेढ़-दो बजे तक जितने भी लोग थे करीब सौ से ज्यादा लोगों को पुलिस की दो बसों और जिप्सी में भरकर लाया गया था। पीड़ित युवक ने इस मामले में सख्त कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने कहा कि मंत्री को अपने पद पर बने रहने का कोई हक नहीं है। साहिब सिंह ने कहा है कि हमारी मांग यही है कि उन्हें इस्तीफा देना चाहिए। वे मंत्री बनने लायक नहीं हैं। उनके खिलाफ कम से कम एफआईआर तो दर्ज होनी ही चाहिए। अगर मैंने या किसी और आम आदमी ने ऐसा कुछ किया होता तो कितनी सख्त कार्रवाई होती।

प्रवेश वर्मा पर हो एफआईआर वह दे इस्तीफा

थप्पड़ खाने वाले युवक साहिब सिंह ने मंत्री प्रवेश वर्मा कार्रवाई और एफआईआर की मांग की है। पीड़ित साहिब सिंह ने कहा कि पूरी घटना का उनके पास लाइव वीडियो मौजूद है। उन्होंने दावा किया कि उन्होंने मंत्री के खिलाफ एक भी अपशब्द नहीं कहा था। साहिब सिंह ने मीडिया से बात करते हुए कहा है कि उस समय मैं आम आदमी पार्टी के विधायक जरनैल सिंह के इंस्टाग्राम पेज पर लाइव था। जब मैंने सड़क का टुकड़ा उठाया कैमरा उधर से लेकर उनकी तरफ गया और जब तक मैं उन्हें दिखाता तब तक उन्होंने मेरा फोन छीन लिया। मेरे पास उस पूरी घटना का वीडियो है। एक प्रतिशत भी अगर मैंने कोई गाली दी है कोई गलत शब्द मेरे मुंह से निकला है तो मैं अपने लगाए हुए सारे आरोप वापस लेने को तैयार हूं और उनसे माफी मांग लूंगा। लेकिन हमने कुछ भी गलत नहीं बोला। साहिब सिंह ने कहा हम उन्हें सड़क की क्वालिटी दिखा रहे थे। हमने उन्हें दिखाया कि इस सड़क की असली वैल्यू क्या है। सड़क कालीन से भी हल्की बनी हुई थी वह टूट रही थी हाथ से ही निकल रही थी। साहिब सिंह का आरोप है कि सड़क की खराब गुणवत्ता दिखाने से मंत्री भड़क गए। उन्होंने कहा जब खराब गुणवत्ता का मामला सामने आ गया तो वे एकदम से भड़क मानों कोई स्कैम उजागर कर रहे हो। उन्होंने थप्पड़ मार दिया। उसके बाद वे चले गए। उन्हें इतना खौफ नहीं होना चाहिए। उन्हें सामने आना चाहिए और पुलिस व सिक्योरिटी के पीछे नहीं छिपना चाहिए।

मंत्रियों का विवादों से है चोली दामन का साथ, कई बार बिगड़ी है बात

प्रवेश वर्मा के थप्पड़ से देश कि सियासत को गर्म हो गयी है। यह पहला मौका नहीं है जब बीजेपी के किसी मंत्री या सांसद की टिप्पणी अथवा सार्वजनिक व्यवहार ने बड़ा विवाद खड़ा किया हो। पिछले कुछ समय में ऐसे कई मामले सामने आए हैं जिनमें नेताओं के बयान या व्यवहार को लेकर विपक्ष और जनता ने सवाल उठाए। फर्क सिर्फ इतना है कि हर विवाद की प्रकृति अलग रही कहीं बयान पर बवाल हुआ कहीं महिला अधिकारी को लेकर टिप्पणी पर अदालत पहुंची और कहीं युवा पीढ़ी पर ही शब्दों के तीर चल गए। मोदी की सांसद कंगना रनौत को ही ले लीजिए। उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए प्रदर्शन कर रही युवा महिलाओं और जेन जी के एक वर्ग को निशाना बनाया और उनके लिए जनरेशन गटर जैसे शब्द का इस्तेमाल किया। उन्होंने युवा महिलाओं की जीवनशैली स्वतंत्रता और कथित पश्चिमी प्रभाव पर भी सवाल उठाए। उनके बयान के बाद सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रिया हुई और राजनीतिक गलियारों में भी विवाद खड़ा हुआ। मध्य प्रदेश के तत्कालीन मंत्री कुंवर विजय शाह का मामला इससे भी आगे गया। मई 2025 में ऑपरेशन सिंदूर के संदर्भ में कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर उनकी टिप्पणी पर भारी विवाद हुआ। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने मामले में एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया और अदालत की मौखिक टिप्पणी में बयान को बेहद गंभीर बताया गया और अब प्रवेश वर्मा का थप्पड़ से एक बार फिर देश का सियासी पारा नाजुक मोड़ पर पहुंच चुका है। देखना यही होगा कि पीएम मोदी इस बार भी चुप रह कर मामले को रफा दफा कर देंगे या फिर इस मामले में कार्रवाई करेंगे। क्योंकि मामला नाजुक है और जेन जी से जुड़ा हुआ।

भाजपा के भ्रष्टाचार ने शहरों में कराया जलभराव

» सपा प्रमुख अखिलेश यादव बोले- गंगा एक्सप्रेस का नाम वाटरवे कर दिया जाए

» विभिन्न जिलों से आए जाने-माने खिलाड़ियों से मिले सपा प्रमुख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख ने एकबार फिर भाजपा पर प्रहार किया है। उन्होंने गंगा एक्सप्रेस वे बारिश के पानी को भरने पर भाजपा सरकार को घेरा। सपा प्रमुख ने कहा भाजपा के भ्रष्टाचार के कारण जलभराव हो गरहा है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि शहरों में जलभराव का मुख्य कारण अधिक वर्षा नहीं, बल्कि भाजपा के भ्रष्टाचार की वजह से जल निकासी की व्यवस्था का फेल हो जाना है।

नाली से लेकर नाले तक गंदगी से जाम हैं तो पानी कहां से निकलेगा। उन्होंने नए बने बने गांगा एक्सप्रेस वे की तस्वीर डालतें हुए कहा की नाम बदनले वालों को इसका नाम वाटी वे कर देना चाहिए। प्रदेश सपा मुख्यालय पर विभिन्न जिलों से आए जाने-माने खिलाड़ियों की बैठक हुई। इसमें सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने खेल के साथ ही खेल कर दिया है। समाजवादी सरकार में खेल-खिलाड़ियों की तमाम समस्याओं का समाधान किया जाएगा। समाजवादी सरकार में खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं योगदान के लिए यशभारती सम्मान के साथ 21 लाख रुपये की राशि और एक लाख रुपये प्रतिमाह पेंशन दी जाएगी। इस अवसर पर हसनउद्दीन सिद्दीकी, पर्वतारोही सागर कसाना, भारत केसरी पहलवान राम आसरे आदि मौजूद रहे।

यूपी के मुख्यमंत्री वोट चोरी की प्रक्रिया में हैं शामिल

सपा अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी के मुख्यमंत्री और भाजपा वोट चोरी और घोटाले में शामिल है। इसलिए वे वोट चोरी मामले में चुनाव आयोग का बचाव कर रहे है। उन्होंने कहा कि जो लोग अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर में चढ़ावा चोरी और चंदा चोरी कर सकते है, उनसे क्या उम्मीद की जा सकती है। अखिलेश यादव ने प्रदेश सपा मुख्यालय पर प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि चुनाव आयोग अपनी विश्वसनीयता बचाए। किसी के इशारे पर काम न करे। समाजवादी पार्टी ने वोट चोरी और चुनाव में बेईमानी को लेकर चुनाव आयोग से कई बार शिकायतें की, लेकिन चुनाव आयोग ने कोई कार्रवाई नहीं की। उपचुनावों में सभी ने लोकतंत्र की हत्या होते हुए देखी। एसआईआर के दौरान भाजपा ने सूची से नाम कटवाने के लिए छपे हुए फॉर्म-7 गांव-गांव भेजे।

30 सितंबर को इंडिया गठबंधन की बैठक में शामिल नहीं होंगे अखिलेश यादव

सपा और कांग्रेस के नेताओं के बीच सीट शेयरिंग को लेकर चल रही बयानबाजी के बीच अखिलेश यादव 30 सितंबर को दिल्ली में होने वाली इंडिया गठबंधन की बैठक में शामिल नहीं होंगे। पत्रकार वार्ता में उन्होंने कहा कि वह इस बार बैठक में शामिल नहीं हो पाएंगे। इस बारे में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से उनकी बात हुई है। उस दिन मैं (अखिलेश यादव) व्यस्त हूं। गठबंधन की बैठक में हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेता जाएंगे। राजनीतिक गलियारों के इस बात के निहितार्थ निकाले जा सकते हैं।

सपा प्रमुख ने शहीद भगत सिंह को दी श्रद्धांजलि

शहीद भगत सिंह की 117वीं जयंती पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव सहित विभिन्न दलों के नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। सपा प्रमुख और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, महान क्रांतिकारी शहीद-ए-आज़म भगत सिंह जी की जयंती पर शत शत नमन।

राज्य के राजनीतिक हालात और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा जरूरी: महबूबा मुफ्ती

» पीडीपी की अध्यक्ष ने मीरवाइज उमर फारूक से की मुलाकात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने कश्मीर के प्रमुख धर्मगुरु मीरवाइज उमर फारूक से उनके आवास पर मुलाकात की और इस दौरान उन्होंने जम्मू-कश्मीर की मौजूदा राजनीतिक स्थिति के साथ-साथ युवाओं में मादक पदार्थों की बढ़ती लत समेत गंभीर सामाजिक चुनौतियों पर चर्चा की।

यह बैठक उत्तर कश्मीर की गुरेज घाटी में प्रस्तावित 'तंत्र इन साइलेंस' रिट्रीट को लेकर दोनों नेताओं द्वारा सार्वजनिक रूप से साझा चिंताएं जताए जाने के कुछ दिनों बाद हुई है। इसके बाद प्रशासन ने स्पष्ट किया था कि इस कार्यक्रम के लिए कोई अनुमति नहीं दी गई थी। ने पहले कभी नहीं देखा होगा! मीरवाइज ने कहा, महबूबाजी आज मुझसे मिलने आईं। हमने हमारे सामने मौजूद सामाजिक चिंताओं और चुनौतियों तथा सभी हितधारकों को साथ लेकर मिल-जुलकर उनका समाधान करने की आवश्यकता पर बातचीत की। हमने जम्मू-कश्मीर की मौजूदा राजनीतिक स्थिति पर भी विस्तार से चर्चा की। कुल मिलाकर यह एक अच्छी बातचीत रही। पीडीपी प्रमुख के करीबी सूत्रों ने बताया कि उन्होंने कश्मीर के युवाओं, विद्वानों, महिलाओं, हितधारकों, कलाकारों और सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं के साथ घाटी के सामने मौजूद सामाजिक मुद्दों को लेकर प्रमुख धार्मिक नेता से मुलाकात की। सूत्रों ने बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री की चिंताओं को उचित स्तर पर उठाया जा रहा है और मीरवाइज को वर्तमान में कश्मीर के सामने मौजूद सामाजिक मुद्दों से अवगत कराया गया। यह बैठक कश्मीर में मादक पदार्थों और युवाओं के सामने मौजूद अन्य चुनौतियों को लेकर धार्मिक एवं सामुदायिक नेताओं के बीच बढ़ती चिंता की पृष्ठभूमि में भी हुई है। यह बैठक गुरेज में प्रस्तावित रिट्रीट को लेकर महबूबा और मीरवाइज के बीच हाल में सार्वजनिक रूप से बनी सहमति के बाद हुई। मीरवाइज ने गुरेज घाटी में 24 से 27 सितंबर के बीच 'तंत्र इन साइलेंस' नामक कार्यक्रम आयोजित करने की खबरों पर चिंता जताते हुए संबंधित अधिकारियों से कश्मीर के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक लोकाचार का दोहन रोकने की अपील की थी। महबूबा मुफ्ती ने भी इससे पहले एक पोस्ट में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और पुलिस से मामले में हस्तक्षेप करने और उचित कार्रवाई करने की अपील की थी।

» मायावती के साथ कर सकते हैं बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने देश में बाढ़ और सूखे से प्रभावित लोगों की मदद करने का निर्देश पार्टी पदाधिकारियों को दिया है। हालांकि उन्होंने इसके लिए किसी से चंदा जुटाने से मना किया है ताकि इसका कोई नाजायज फायदा नहीं उठा सके। उन्होंने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर वह इन क्षेत्रों का दौरा करने पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक ईशान आनंद को भेज सकती हैं। वहीं पार्टी के सेक्टर 3 के दोनों राज्यों (यूपी व उत्तराखंड) में हालात का जायजा लेने खुद जा सकती हैं।

बसपा सुप्रीमो ने अपने बयान में कहा कि बीते कुछ दिनों से देश के विभिन्न राज्यों में भारी वर्षा, आंधी, तूफान से जनता मुश्किल में है। ऐसे हालात में केंद्र सरकार और संबंधित राज्य सरकारों को प्रभावित लोगों की पूरी मदद करनी चाहिए। महाराष्ट्र के कई इलाकों में सूखे की मार झेल रहे लोगों खासकर किसानों की राज्य सरकार को जमीनी मदद करके फौरी राहत देनी चाहिए। बसपा सुप्रीमो ने कहा कि अब पार्टी संगठन को तीन सेक्टरों में बांटकर चार केंद्रीय सेक्टर प्रभारी बनाए गए हैं। सेक्टर नंबर 1 में 10 राज्य हैं, जिसे बसपा के राज्यसभा सांसद रामजी गौतम व सुरेश राव देखते हैं। वहीं सेक्टर 2 में 9 राज्य हैं, जिनको पूर्व राज्यसभा सांसद राजाराम व पूर्व विधायक अतर सिंह राव देख रहे हैं। सेक्टर नंबर 3 लखनऊ पार्टी केंद्रीय कैंप कार्यालय द्वारा देखा जाता है। उन्होंने चारों केंद्रीय सेक्टर प्रभारियों से बाढ़ प्रभावितों की मदद करने को कहा है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

2 अक्टूबर के सीजेपी प्रदर्शन का समर्थन दूंगा: वांगचुक

» शिक्षाविद् और जलवायु कार्यकर्ता खुद नहीं होंगे शामिल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लद्दाख। शिक्षाविद् और जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) की ओर से मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के खिलाफ 2 अक्टूबर को प्रस्तावित प्रदर्शन का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि देश में जवाबदेही बढ़ाने और चुनावी प्रक्रिया को बेहतर बनाने की कोशिशों को समर्थन मिलना चाहिए।

सोनम वांगचुक ने सीजेपी के प्रस्तावित प्रदर्शन को अपना समर्थन दिया है, लेकिन वह खुद प्रदर्शन में शामिल नहीं होंगे। उन्होंने साफ किया कि हर आंदोलन में उनकी व्यक्तिगत मौजूदगी जरूरी नहीं है। वांगचुक ने कहा, समर्थन निश्चित रूप से है। देश में जवाबदेही बढ़ाने के लिए जो भी प्रयास किए जा रहे हैं, मैं हमेशा उनके साथ हूं। उन्होंने आगे कहा, मेरे लिए आंदोलनों का समर्थन करने का मतलब यह है कि ये आंदोलन अपने दम पर आगे बढ़ें।

इस मुद्दे को लेकर अब कई लोग सामने आ रहे हैं और यह देखकर मुझे खुशी है। इसलिए उम्मीद है कि सीईसी से जुड़े इस मुद्दे पर मेरी व्यक्तिगत मौजूदगी की जरूरत नहीं पड़ेगी। सोनम वांगचुक का यह बयान चुनाव आयोग के कामकाज को लेकर उठे विवाद के बीच आया है। इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट में दावा किया गया था कि चुनाव आयुक्त एस.एस. संधू और विवेक जोशी ने पिछले 10 महीनों में मतदाता पंजीकरण और विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े फैसलों पर कम से कम 14 बार आपत्ति दर्ज कराई थी।

हालांकि, चुनाव आयोग ने शनिवार को कहा कि एसआईआर से जुड़े सभी फैसलों को तीनों चुनाव आयुक्तों की मंजूरी मिली थी। आयोग ने एसआईआर के दौरान नोटिस का सामना कर रहे मतदाताओं की मदद के लिए कई उपायों की भी जानकारी दी। वांगचुक ने कहा कि आंदोलनों का समर्थन करने का मतलब यह नहीं है कि हर जगह उनकी व्यक्तिगत मौजूदगी जरूरी हो।

महाराष्ट्र में सूखे पर गरमाई राजनीति

कांग्रेस बोली- पूरा ध्यान सिर्फ गुजरात पर है

» मोदी से मिलेंगे एमवीए सांसद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में सूखे की घोषणा को लेकर अब विपक्ष और सरकार के बीच बयानबाजी तेज हो गई है। एक तरफ विपक्षी नेता तत्काल आर्थिक सहायता देने की मांग कर रहे हैं, वहीं सरकार की ओर से जमीनी स्थिति और नुकसान के आकलन के आधार पर आगे कदम उठाने की बात कही जा रही है। महाराष्ट्र में कम बारिश और फसलों पर संकट को लेकर राज्य की सियासत गरमा गई है।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता विजय वडेट्टीवार ने राज्य सरकार से तत्काल सूखा घोषित करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक ने सूखा घोषित कर दिया है, फिर महाराष्ट्र सरकार किसका इंतजार कर रही है। वहीं कांग्रेस नेता बलवंत वानखड़े ने कहा कि बारिश की कमी से खेतों में खड़ी फसलें सूख रही हैं और किसानों की स्थिति गंभीर होती जा रही है। इस बीच, महाविकास आघाड़ी (एमवीए) के सांसद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात कर महाराष्ट्र में सूखा घोषित करने की मांग रखने की तैयारी में है। राज्य के मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने भी कहा कि प्रधानमंत्री के सामने जमीनी स्थिति रखना गलत नहीं है और उन्हें उम्मीद है कि केंद्र इस मुद्दे पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देगा।

‘सरकार महाराष्ट्र में तुरंत सूखा घोषित करे’

महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय वडेट्टीवार ने महाराष्ट्र में सूखे की घोषणा की मांग करते हुए कहा कि कर्नाटक ने सूखा घोषित कर दिया है। उन्होंने कहा, महाराष्ट्र सरकार अब किसका इंतजार कर रही है और क्या वह दिल्ली से निर्देश मिलने की प्रतीक्षा कर रही है। सूखे और ओलावृष्टि के कारण किसानों को भारी नुकसान हुआ है। पिछले साल केंद्र सरकार से महाराष्ट्र को पर्याप्त मदद नहीं मिली।

शरद पवार भी सीएम फडणवीस से कर चुके हैं सूखा घोषित करने की मांग

इससे पहले राष्टवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिखकर कम बारिश से प्रभावित तालुकाओं में सूखा घोषित करने की मांग की थी। पवार ने कहा था कि सरकार को औपचारिक प्रक्रिया पूरी होने का इंतजार किए बिना प्रभावित क्षेत्रों में राहत पहुंचानी चाहिए। पवार के मुताबिक, राज्य के 36 में से 31 जिलों में औसत से कम बारिश हुई है। उन्होंने 1 जून से 15 सितंबर के बीच महाराष्ट्र में 648 मिमी बारिश होने का दावा किया, जो औसत से 19 प्रतिशत कम है। उन्होंने कहा कि कम बारिश के कारण सोयाबीन, कपास और दलहन जैसी फसलों को नुकसान पहुंचा है तथा कई इलाकों में पानी और चारे की समस्या भी बढ़ सकती है।

‘45 दिन से बारिश नहीं, फसलें सूख रही हैं’ : वानखड़े

कांग्रेस नेता बलवंत वानखड़े ने भी महाराष्ट्र में सूखा घोषित करने की मांग की। उन्होंने कहा कि राज्य के कई हिस्सों में 45 दिनों से बारिश नहीं हुई है और खेतों में खड़ी फसलें सूख रही हैं। जिस वजह से किसान जान तक दे रहे हैं। वानखड़े ने कहा कि प्रशासन और जनप्रतिनिधियों की ओर से सरकार को स्थिति की जानकारी दी जा रही है, लेकिन अभी तक सूखा घोषित नहीं किया गया है। उन्होंने किसानों की स्थिति को देखते हुए तत्काल सरकारी हस्तक्षेप की मांग की। महाराष्ट्र में सूखा घोषित करने की मांग को लेकर विपक्षी गठबंधन महाविकास आघाड़ी के सांसद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से जल्द ही मुलाकात कर सकते हैं। इस दौरान राज्य के सूखे जैसे हालात और किसानों को होने वाले नुकसान की जानकारी प्रधानमंत्री को दी जाएगी।

गुजरात को मदद, पर महाराष्ट्र की अनदेखी : वडेट्टीवार

वडेट्टीवार ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार का पूरा ध्यान सिर्फ गुजरात पर रहता है और वह महाराष्ट्र की अनदेखी करते हैं। केंद्र से गुजरात को सब कुछ मिलता है। उन्होंने सरकार से तत्काल सूखा घोषित करने की मांग की। उन्होंने कहा कि गणेश विसर्जन के बाद कांग्रेस नेता राज्य के हर जिले का दौरा कर जमीनी स्थिति का जायजा लेंगे। जरूरत पड़ने पर महाराष्ट्र में किसानों के मुद्दे पर बड़ा आंदोलन शुरू करने की चेतावनी भी उन्होंने दी।

प्रधानमंत्री से मुलाकात कर जमीनी स्थिति बताने में कोई नुकसान नहीं : बावनकुले

राज्य के राजस्व मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने इस पर कहा कि प्रधानमंत्री से मुलाकात कर जमीनी स्थिति बताने में कोई नुकसान नहीं है। नागपुर में पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री के सामने तथ्य और जमीनी स्थिति रखने में कोई हर्ज नहीं है। केंद्र सरकार ने अतीत में भी सूखे के दौरान महाराष्ट्र को कई मौकों पर सहायता प्रदान की है। हमें पूरा भरोसा है कि जब एमवीए सांसद पीएम मोदी से मुलाकात करेंगे, तो वे इस मामले पर बेहद सकारात्मक रुख अपनाएंगे।

किसानों के लिए 50 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर सहायता की मांग

शरद पवार ने प्रभावित किसानों को कम से कम 50 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर की आर्थिक सहायता देने की मांग की है। इसके अलावा खेतिहर मजदूर परिवारों को 25 हजार रुपये प्रति परिवार की विशेष सहायता देने की मांग भी की गई है। पवार ने तत्काल कृषि कर्ज माफी लागू करने और किसानों को अगली फसल के लिए नया कर्ज उपलब्ध कराने की मांग की। उन्होंने नियमित रूप से कर्ज चुकाने वाले किसानों के लिए प्रोत्साहन राशि 50 हजार से बढ़ाकर एक लाख रुपये करने की मांग भी रखी है। उन्होंने उन किसानों को भी प्रस्तावित कर्जमाफी में शामिल करने की मांग की है, जिन्होंने 2025-26 में फसल ऋण लिया था लेकिन इस साल भुगतान नहीं कर सके।

फसल बीमा और पानी के टैंकर की भी मांग

पवार ने एक रुपये वाली फसल बीमा योजना को पिछली तारीख से लागू करने और पिछले साल बेमौसम बारिश से फसल नुकसान के लिए घोषित 17 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर की सहायता राशि तत्काल जारी करने की मांग की है। सूखे जैसे हालात वाले क्षेत्रों में रोजगार गारंटी योजना के तहत खेती और जल संरक्षण से जुड़े विशेष काम शुरू करने तथा बागों को बचाने के लिए जरूरत वाले इलाकों में पानी के टैंकर उपलब्ध कराने की मांग भी पूर्व केंद्रीय मंत्री ने की है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

जिद... सच की

खनन माफिया पर लगाम कागजों से कब निकलेगा

अभी हाल में पहाड़ी राज्यों में भू-स्खलन से भारी तबाही मची थी। उसका एक सबसे बड़ा कारण पहाड़ों में अवैध कटना या खनन। इससे पहल अरावली की पहाड़ियों के कटाई पर अदालत ने आपत्ति की थी जिसे सरकार को नियमों को बदलना पड़ा था पर थोड़े दिनों बाद सब ठ्डे बस्त में चला गया। ऐसे देखने में आ रहा है कि खनन माफिया पर लगाम के सरकारी दावे कागजों में ही सिमटते नजर आ रहे हैं। माफिया का इससे ज्यादा दुस्साहस और क्या होगा कि अवैध खनन रोकने गए अफसर-कार्मिकों की जान तक लेने से नहीं डर रहे। राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के छोटी सादड़ी क्षेत्र में अवैध खनन रोकने गए वन विभाग के रेंजर को डंपर से कुचलने की घटना सीधे-सीधे कानून-व्यवस्था के रखवालों को चुनौती है। यह कोई पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी वन, खनिज व पुलिस महकमे के अधिकारी-कर्मचारी ऐसे ही बेखौफ माफिया का शिकार बन चुके हैं। जांच की खानापूर्ति, विशेष जांच टीमों का गठन और सजा के सख्त प्रावधान भी खनन माफिया पर लगाम नहीं लगा पा रहे।

राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश में बजरी के अवैध खनन और परिवहन को लेकर दो साल पहले टिप्पणी की थी कि लगता है कि पुलिस और खान विभाग की बजरी माफिया से मिलीभगत है। सरकार माफिया के खिलाफ कागजी अभियान चलाती है और जब कार्रवाई की बारी आती है, तो खानापूर्ति के अलावा कुछ नहीं किया जाता। अभियानों को लेकर विधानसभा तक में मंत्री लाचारी भरा जवाब दें कि कोई भी अभियान दो-दो, तीन-तीन साल थोड़े ही चलता है, तो माफिया के खिलाफ खानापूर्ति के अभियानों की हकीकत भी सामने आ जाती है। माफिया के लिए चलाए जाने वाले अभियान तो सतत रूप से चलने चाहिए। तब जाकर ही कानून का डर लोगों के अंदर पैदा किया जा सकता है। सरकारी नियम-कायदों, रॉयल्टी और पर्यावरणीय शर्तों की अनदेखी कर माफिया मालामाल होते जा रहे हैं। राजनीतिक संरक्षण, भ्रष्टाचार और विभागों के बीच समन्वय की कमी भी माफिया को पनपाने के लिए जिम्मेदार हैं। संयुक्त प्रवर्तन दल बनाने, ड्रोन और जीपीएस आधारित निगरानी की व्यवस्था भी तब ही कारगर साबित होगी जब मिलीभगत के खेल को रोका जाएगा। साथ ही कानून को चुनौती देने वालों को ऐसी सजा देनी चाहिए, जिससे अपराधियों के अंदर भय पैदा हो सके।

“ माफिया का इससे ज्यादा दुस्साहस और क्या होगा कि अवैध खनन रोकने गए अफसर-कार्मिकों की जान तक लेने से नहीं डर रहे। राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के छोटी सादड़ी क्षेत्र में अवैध खनन रोकने गए वन विभाग के रेंजर को डंपर से कुचलने की घटना सीधे-सीधे कानून-व्यवस्था के रखवालों को चुनौती है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

नदी के प्राकृतिक प्रवाह के साथ सामंजस्य बनाएं

पंकज चतुर्वेदी

सहरसा जिले के सिरवार सहित भागलपुर, सुपौल, मधेपुरा और कटिहार के कई गांव हर वर्ष कोसी की बाढ़ और कटाव से प्रभावित होते हैं। दर्जनों घर नदी में समा जाते हैं और बड़ी मात्रा में भूमि बह जाती है। हिमालय की ऊंची पर्वत-शृंखलाओं से निकलने वाली तीन धाराओं—सुन कोसी, अरुण कोसी और तमूर कोसी के मिलन से बनी कोसी जब उत्तर बिहार के मैदानी इलाकों में प्रवेश करती है, तो 'बिहार का शोक' बन जाती है। पिछले लगभग ढाई सौ वर्षों में इस नदी ने अपना मार्ग करीब 120 किलोमीटर तक बदल लिया है। इसकी वार्षिक बाढ़ लगभग 21 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को प्रभावित करती है, जिससे लाखों परिवारों की खेती-बाड़ी, घर और आजीविका तबाह हो जाती है। अकेले बिहार में ही देश के कुल बाढ़-प्रभावित क्षेत्र का लगभग 16.5 प्रतिशत और बाढ़ से प्रभावित आबादी का करीब 22 प्रतिशत हिस्सा है। यहां केवल आर्थिक क्षति की बात नहीं है।

हर बाढ़ के साथ हजारों परिवार बेघर होते हैं। खेतों में जमा गाद कई बार लंबे समय तक खेती को प्रभावित करती है, बीमारियां फैलती हैं और बच्चों की पढ़ाई तथा स्वास्थ्य पर भी दीर्घकालिक असर पड़ता है। बाढ़ की समस्या को बढ़ाने वाले कारणों में हिमालयी पर्वत-शृंखला में तेजी से हो रहे पर्यावरणीय बदलाव भी शामिल हैं। वैश्विक तापमान में लगातार वृद्धि के कारण ऊंचाई वाले क्षेत्रों में स्थित हिमनद यानी ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इस प्रक्रिया से पहाड़ों में नई झीलें बन रही हैं और पुरानी झीलों का आकार भी असामान्य रूप से बढ़ रहा है। ग्लेशियरों के पिघलने से जहां गर्मियों में अचानक जलस्तर बढ़ सकता है, वहीं मानसून के दौरान असामान्य और केंद्रित वर्षा भी नदी के जलस्तर में तेज उतार-चढ़ाव का कारण बनती है। पहले जो वर्षा कई दिनों में फैलकर होती थी, अब कई बार वही पानी कुछ ही घंटों में बरस जाता है। इससे नदी को अतिरिक्त जल को संभालने का पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। हिमालय से बहकर आने वाली भारी मात्रा में गाद नदी की तली में लगातार जमा होती जा रही है।

इससे नदी का तल धीरे-धीरे ऊंचा उठ रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, गाद लाना और अपना मार्ग बदलना कोसी नदी की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उत्तर बिहार का बड़ा भू-भाग भी इसी गाद के जमाव से निर्मित हुआ है। सत्तर के दशक तक किसान इस गाद के लाभ को समझते थे, क्योंकि इससे खेतों की उर्वरता बढ़ती थी। लेकिन बाढ़ नियंत्रण के लिए बनाए गए तटबंधों ने नदी को

एक संकरे दायरे में सीमित कर दिया। परिणामस्वरूप गाद प्राकृतिक रूप से फैलने के बजाय नदी की तलहटी में ही जमा होती चली गई। इसका परिणाम यह हुआ कि कई स्थानों पर नदी का तल आसपास की जमीन से भी ऊंचा हो गया है। ऐसे में जब तटबंध कमजोर पड़ते हैं या टूट जाते हैं, तो पानी तेजी से आसपास की बस्तियों में प्रवेश कर जाता है और बड़े पैमाने पर तबाही मचाता है। इस संकट से निपटने के लिए दीर्घकालिक और बहुआयामी रणनीति अपनाने की आवश्यकता है। हिमालयी क्षेत्र की जोखिम वाली झीलों की निरंतर वैज्ञानिक निगरानी की जानी चाहिए। उपग्रह-आधारित तकनीक और स्वचालित सेंसरों की मदद से इन झीलों के जलस्तर पर नजर रखी जा सकती है। खतरा बढ़ने पर नीचे बसे गांवों को समय रहते चेतावनी दी जा सकती है। नेपाल और भारत के बीच नदी के जलस्तर तथा मौसम संबंधी वास्तविक समय की जानकारी साझा करने की व्यवस्था को भी मजबूत करना जरूरी है। दूसरा महत्वपूर्ण पहलू तटबंधों के रखरखाव और उनके डिजाइन में सुधार से जुड़ा है। पुराने और कमजोर तटबंधों की नियमित मरम्मत के साथ उन्हें आधुनिक इंजीनियरिंग मानकों के अनुरूप मजबूत किया जाना चाहिए। इसके अलावा, कुछ स्थानों पर तटबंधों के बीच की दूरी बढ़ाकर नदी को अधिक प्राकृतिक क्षेत्र उपलब्ध कराने पर भी विचार किया जा सकता है, ताकि गाद को स्वाभाविक रूप से फैलने की जगह मिले और नदी का तल लगातार ऊंचा न उठे। नदी की तलहटी से गाद निकालने और उसके योजनाबद्ध उपयोग की व्यवस्था भी विकसित की जा सकती है। इसका उपयोग खेती तथा निर्माण कार्यों में किया जा सकता है। स्थानीय स्तर पर बाढ़-रोधी या बाढ़ के अनुकूल फसलों और कृषि-पद्धतियों को अपनाना तथा नावों और अन्य आपातकालीन संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है।

समुदाय-आधारित आपदा प्रबंधन समितियों को प्रशिक्षित कर स्थानीय लोगों को आपदा के समय तत्काल प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन के दीर्घकालिक प्रभावों से निपटने के लिए कार्बन उत्सर्जन कम करने के वैश्विक प्रयासों में भारत जैसे देशों की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है।

पॉकेट वीटो पर रोक से संरक्षित संविधान की मर्यादा

डॉ. सुधीर कुमार

भारत का संविधान केवल अनुच्छेदों और धाराओं का एक संग्रह मात्र नहीं, बल्कि एक जीवंत दस्तावेज है जो देश की लोकतांत्रिक आत्मा को दिशा देता है। एक स्वस्थ लोकतंत्र में, जनता द्वारा चुनी गई सरकार और संवैधानिक पदों पर बैठे व्यक्तियों के बीच सामंजस्य होना बुनियादी शर्त है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में, भारत के कई राज्यों में एक चिंताजनक प्रवृत्ति सामने आई - चुनी हुई राज्य विधानसभाओं और राजभवन के बीच निरंतर टकराव। यह तब अधिक मुखर हो जाता है जब विधानसभाओं द्वारा जनहित में पारित किए विधेयक राजभवन में जाकर महीनों, या कभी-कभी सालों तक, धूल फांकते रहते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 'पंजाब और तमिलनाडु राज्य बनाम राज्यपाल' (2023) मामलों में ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए राज्यपालों के 'पॉकेट वीटो' पर रोक लगा दी है।

कोर्ट ने अनुच्छेद 200 की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया कि मनोनीत राज्यपाल द्वारा चुनी हुई विधानसभा के विधेयकों को अनिश्चित काल तक रोके रखना संवैधानिक मर्यादा के खिलाफ है। इस अहम फैसले ने न केवल संसदीय लोकतंत्र को मजबूत किया है बल्कि विधायिका और राजभवन के बीच शक्तियों का संतुलन भी फिर से स्थापित किया। विवाद की जड़ अनुच्छेद 200 और 'पॉकेट वीटो' के भ्रम में छिपी है। संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत, जब विधानसभा कोई विधेयक पारित कर राज्यपाल की सहमति के लिए भेजती है, तो उनके पास मुख्यतया चार विकल्प होते हैं सहमति देना, सहमति रोकना, सुझावों के साथ विधानसभा को पुनर्विचार के लिए वापस भेजना, या कुछ विशिष्ट मामलों में इसे राष्ट्रपति के विचारार्थ सुरक्षित रखना। संविधान में प्रावधान है कि यदि राज्यपाल विधेयक को पुनर्विचार के लिए लौटाना चाहते हैं, तो यह कार्य 'यथाशीघ्र' होना चाहिए, लेकिन इसके लिए कोई निश्चित समय-सीमा तय नहीं की गई है। इसी भाषाई लचीलेपन का फायदा उठाते हुए कई राज्यपाल विधेयकों पर न तो सहमति देते हैं और न ही उन्हें लौटाते हैं, बल्कि अनिश्चितकाल के लिए अपने पास रख लेते हैं, जिसे राजनीति की भाषा में 'पॉकेट वीटो' कहा जाता है।

इस समस्या पर सुप्रीम कोर्ट ने संविधान की भावना स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'यथाशीघ्र' का अर्थ अनंत काल नहीं हो सकता। संविधान निर्माताओं की मंशा के अनुसार राज्यपाल का पद एक मार्गदर्शक और संवैधानिक प्रमुख का है, न कि समानांतर सरकार चलाने वाले का। किसी विधेयक पर निर्णय लेने में जानबूझकर की गई देरी न केवल जनादेश का अनादर है, बल्कि इससे राज्य का विकास और लोक-कल्याण भी बाधित होता है। सुप्रीम कोर्ट ने भी यह बात रेखांकित की है कि एक गैर-निर्वाचित व्यक्ति (राज्यपाल) जनता द्वारा चुनी गई विधायिका की कानून बनाने की संवैधानिक शक्ति पर हावी नहीं हो सकता। इस मामले का एक और कानूनी पहलू है—शक्तियों का पृथक्करण। लोकतंत्र में कार्यपालिका (सरकार), विधायिका (संसद/विधानसभा) और न्यायपालिका (अदालतें) के अपने-अपने अधिकार क्षेत्र हैं। अदालतें आम तौर पर राज्यपालों या राष्ट्रपति को यह निर्देश नहीं देतीं कि उन्हें क्या करना चाहिए, क्योंकि अनुच्छेद 361 उन्हें उनके पद के कर्तव्यों के निर्वहन में अदालतों के प्रति जवाबदेही से छूट देता है।

तो फिर सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में दखल क्यों दिया? यहां न्यायालय ने एक बहुत ही संतुलित और परिपक्व कानूनी सिद्धांत का उपयोग किया, जिसे 'सीमित परमादेश' कहा जा सकता है। परमादेश एक रिट है जिसके जरिए अदालत किसी भी सरकारी अधिकारी को अपना काम करने का आदेश देती है। अदालत ने यह नहीं कहा कि राज्यपाल किसी विधेयक पर 'क्या' फैसला लें। यह भी नहीं कि वे बिल पर हस्ताक्षर करें ही। बल्कि, अदालत ने केवल इतना कहा कि राज्यपाल को 'कुछ न कुछ' फैसला तो लेना ही होगा। वह फाइल दबाकर नहीं बैठ सकते। यह शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत का बेहतरीन सम्मान है। न्यायपालिका ने राज्यपाल के 'निर्णय न लेने की जिद' को असंवैधानिक ठहराया। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला सहकारी संघवाद और राज्य विधायिका की स्वायत्तता पर इसके दूरगामी प्रभाव को रेखांकित करता है। 'पॉकेट वीटो' के जरिए राज्यों के कामकाज में अड़चनें डालना सहकारी संघवाद की भावना पर प्रहार था।

अनुच्छेद 200 के तहत, यदि विधानसभा किसी विधेयक को पुनर्विचार के बाद दोबारा पारित करके भेजती है, तो राज्यपाल उस पर सहमति देने के लिए बाध्य हैं। सर्वोच्च न्यायालय के इस ऐतिहासिक निर्णय ने 'पॉकेट वीटो' रूपी पिछले दरवाजे को बंद कर दिया। यह ऐतिहासिक फैसला भारतीय लोकतंत्र, संवैधानिक मर्यादा और 'संवैधानिक नैतिकता' को पुनर्स्थापित करने वाला सशक्त संदेश है। यानी कोई भी पद संविधान से ऊपर नहीं और राजभवन की भूमिका प्रतिपक्षी की नहीं, बल्कि एक अभिभावक और संवैधानिक रक्षक की हो; वहीं सरकार से भी राजभवन के पद की गरिमा बनाए रखने की अपेक्षा की गई है। सुप्रीम कोर्ट ने तय कर दिया है कि विधेयकों पर अनिश्चितकाल के लिए बैठकर 'पॉकेट वीटो' का प्रयोग करना राज्यपाल का विशेषाधिकार नहीं, बल्कि समयबद्ध निर्णय लेना उनका पवित्र संवैधानिक दायित्व है।

सौंफ

सेहत के लिए है बहुत फायदेमंद

हमारी किचन में मसालों के रूप में कई गुणकारी औषधियां मौजूद होती हैं, जिनसे अक्सर लोग बेखबर रहते हैं। काली मिर्च, लौंग और मेथी के फायदे तो आपने खूब सुने होंगे पर क्या आप जानते हैं कि सौंफ भी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है? खाना खाने के बाद सौंफ खाना भारतीय घरों में आम बात है। कई लोग इसे सिर्फ मुंह की खुशबू के लिए खाते हैं, लेकिन सौंफ का इस्तेमाल लंबे समय से पाचन से जुड़ी परेशानियों में भी किया जाता रहा है। यही वजह है कि रसोई में रखा यह छोटा-सा मसाला कई लोगों की रोज की आदत का हिस्सा बन चुका है। सौंफ में फाइबर, एंटीऑक्सीडेंट और कई तरह के पौधों से मिलने वाले यौगिक पाए जाते हैं। इसमें एनेथोल जैसे यौगिक भी होते हैं, जिन पर इसके संभावित स्वास्थ्य प्रभावों को लेकर कई शोध हुए हैं। कुछ अध्ययनों में सौंफ के पाचन, सूजन और ऐंठन से जुड़े संभावित फायदों का भी जिक्र मिलता है।

डायबिटीज में फायदेमंद

जी हां, सौंफ डायबिटीज (मधुमेह) को नियंत्रित करने में बेहद फायदेमंद है। आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा शोधों के अनुसार, सौंफ में कई ऐसे औषधीय गुण होते हैं जो ब्लड शुगर के स्तर को प्राकृतिक रूप से सुधारने में मदद करते हैं। सौंफ का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है और यह ब्लड शुगर लेवल को स्थिर बनाए रखने में मदद करती है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट इंसुलिन संवेदनशीलता को बढ़ाते हैं।

वजन घटाने में सहायक

वजन घटाने के लिए भी सौंफ का इस्तेमाल काफी लोकप्रिय है। अध्ययनों में दावा किया जाता रहा है कि सौंफ मेटाबॉलिज्म तेज करती है और शरीर की अतिरिक्त चर्बी तेजी से कम करती है। सौंफ में फाइबर होता है और फाइबर युक्त खाद्य पदार्थ पेट भरा रखने में मदद करते हैं। इससे कुल कैलोरी इंटेक को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। वजन कम करने में कैलोरी, भोजन की गुणवत्ता, शारीरिक गतिविधि और नींद जैसे कई कारकों की भूमिका होती है। इसके सेवन से बेवजह की भूख कंट्रोल होती है। सुबह खाली पेट सौंफ का पानी पीने से मेटाबॉलिज्म तेज होता है, जिससे शरीर तेजी से कैलोरी बर्न करता है। यह गैस, अपच, और पेट फूलने जैसी समस्याओं को दूर करती है। अच्छा पाचन वजन कम करने की पहली सीढ़ी है।

आंखों की रोशनी बढ़ाती है

सौंफ आंखों की रोशनी बढ़ाने में मदद करते हैं। यह मोतियाबिंद और उम्र से संबंधित आंखों की समस्याओं को रोकने में सहायक हो सकती है। मॉलिक्यूलर विजन जर्नल में प्रकाशित शोध के अनुसार, सौंफ में ल्यूटिन और जेक्सैंथिन होते हैं, जो रेटिना को स्वस्थ रखते हैं। आंखों की बीमारियों से बचे रहने के लिए भी सौंफ का सेवन किया जा सकता है। लेकिन यह चश्मा हटाने या कमजोर नजर को पूरी तरह ठीक करने का कोई जादुई इलाज नहीं है। आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान दोनों ही मानते हैं कि सौंफ में मौजूद विटामिन ए, विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स आंखों की कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव तनाव से बचाते हैं और उम्र के साथ कमजोर होती रोशनी की रफ्तार को धीमा करते हैं। हालांकि, यह मायोपिया (निकट दृष्टि दोष) जैसी मेडिकल स्थितियों को पूरी तरह ठीक नहीं कर सकती।

पाचन तंत्र के लिए फायदेमंद

सौंफ का सबसे ज्यादा इस्तेमाल पाचन से जुड़ी परेशानियों में किया जाता है। इसमें मौजूद कुछ पौधों के यौगिक पाचन तंत्र की मांसपेशियों पर असर डालते हैं और पेट में होने वाली ऐंठन को कम करने में मदद कर सकते हैं। इसी वजह से गैस, पेट फूलने और हल्की पाचन संबंधी परेशानी में सौंफ का पारंपरिक रूप से इस्तेमाल होता रहा है। सौंफ में फाइबर भी होता है, जो सामान्य पाचन के लिए जरूरी है। हालांकि सिर्फ सौंफ खाने से कब्ज या एसिडिटी सही नहीं होती। सौंफ पाचन तंत्र के लिए एक अचूक और बेहद असरदार औषधि मानी जाती है। भारतीय खान-पान में भोजन के बाद सौंफ खाने की परंपरा सदियों पुरानी है, जिसका सीधा संबंध हमारी पाचन क्रिया को दुरुस्त रखने से है। वैज्ञानिक और आयुर्वेदिक दोनों ही दृष्टिकोण से सौंफ में कई ऐसे गुण पाए जाते हैं जो पेट की सेहत के लिए वरदान हैं। सौंफ में वातहर गुण होते हैं।

हंसना मना है

पहला सरदार : मैंने अपनी वाईफ को 12वीं पास करवाई, फिर, बीए, फिर एमए, और उसकी सरकारी जॉब लगवा दी, अब क्या करूं? दूसरा सरदार : अच्छा लड़का देख कर शादी कर दे!

सरदार ट्रेन की पटरी पर सो गया, एक आदमी बोला- ट्रेन आएगी तो मर जायेगा, सरदार : अबे, अभी प्लेन ऊपर से गया, कुछ नहीं हुआ, तो ट्रेन क्या चीज है?

लड़का : यार, मुझे उस लड़की से बचाओ, दोस्त : क्यों? लड़का : जब से मैंने कह दिया है दिल चीर के देख तेरा ही नाम होगा, तब से वह 'चाकू' लेके मेरे पीछे पड़ गयी है!

लड़की : परसों मैं तुम्हें राखी बांधने आयी थी, पर तुमने नहीं बंधवाई क्यूं? लड़का : अगर मैं तेरे लिए मंगलसूत्र लाऊं तो क्या बंधवायेगी, बात करती है।

बेटा : मुझे शादी नहीं करनी! मुझे सभी औरतों से डर लगता है! पिता- कर ले बेटा! फिर एक ही औरत से डर लगेगा, बाकी सब अच्छी लगेंगी।

पहला दोस्त - क्या कर रहे हो भाई? दूसरा दोस्त - खा रहा हूं भाई...पहला दोस्त- अकेले-अकेले...? दूसरा दोस्त- अबे बीवी से ताने खा रहा हूं, आजा तू भी खा ले...!

कहानी | प्यासा कौवा

एक बार की बात है, गर्मियों की चिलचिलाती दोपहर में एक प्यासा कौवा पानी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था, लेकिन उसे पानी कहीं नहीं मिला। वह प्यासा उड़ता ही जा रहा था। उड़ते-उड़ते उसकी प्यास बढ़ती जा रही थी, जिस कारण उसकी हालत खराब होने लगी। अब कौवे को लगने लगा कि उसकी मौत नजदीक है, लेकिन तभी उसकी नजर एक घड़े पर पड़ी। वो तुरंत हिम्मत जुटाकर उस घड़े तक पहुंचा, लेकिन उसकी खुशी बस कुछ समय के लिए ही थी, क्योंकि उस घड़े में पानी तो था, लेकिन इतना नहीं था कि कौवे की चोंच उस पानी तक पहुंच सके। कौवे ने हर तरह से पानी पीने की कोशिश की, लेकिन वह पानी पीने में सफल नहीं हो पाया। अब कौवा पहले से भी ज्यादा दुखी हो गया था, क्योंकि उसके पास पानी होते हुए भी वह प्यासा था। कुछ देर घड़े को देखते-देखते कौवे की नजर घड़े के आसपास पड़े कंकड़ों पर पड़ी और कंकड़ों को देखते ही उसके मन में एक योजना आई। उसने सोचा कि थोड़ी मेहनत करके अगर वह एक-एक करके सारे कंकड़ घड़े में डाल दे, तो पानी ऊपर आ जाएगा और वो आसानी से पानी पी सकेगा। उसने एक-एक कर आसपास पड़े कंकड़ों को घड़े में डालना शुरू कर दिया। वह कंकड़ों को तब तक घड़े में डालता रहा, जब तक पानी ऊपर उसकी चोंच तक नहीं आ गया। फिर काफी मेहनत के बाद जब पानी ऊपर आ गया, तो कौवे ने जी भरकर पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई।

कहानी से सीख: कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें किसी भी परिस्थिति में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। मेहनत करते रहना चाहिए, क्योंकि मेहनत करने वाले को ही सफलता मिलती है।

7 अंतर खोजें

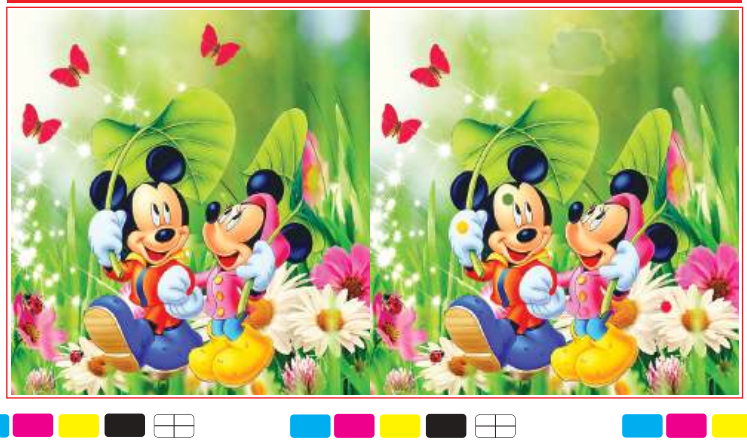

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

कार्यस्थल पर बिना बात के विवादों में न पड़ें। व्यापार में बड़ा पूंजी निवेश आज टाल देना ही बेहतर है। लव पार्टनर के साथ छोटी बात पर तनाव हो सकता है।

वृषभ

करियर में तरक्की के नए रास्ते खुलेंगे। बिजनेस में बड़ा मुनाफा और नए सौदे मिलेंगे। परिवार और दोस्तों के साथ पार्टी का योग है। आय में जबरदस्त बढ़ोतरी होगी।

मिथुन

दफ्तर में आपकी बुद्धिमत्ता और मेहनत की तारीफ होगी। ऑनलाइन या विदेशी व्यापार से बड़ा लाभ हो सकता है। वैवाहिक जीवन में प्रेम और सम्मान बढ़ेगा।

कर्क

भाग्य का पूरा साथ मिलने से अटके काम पूरे होंगे। धार्मिक कार्यों या यात्रा में रुचि बढ़ेगी। कारोबारी हैं तो नए प्रोजेक्ट्स शुरू करने के लिए दिन अच्छा है।

सिंह

कार्यस्थल की गुप्त बातें किसी से शेयर न करें, विरोधी सक्रिय हैं। व्यापार में जल्दबाजी या जोखिमभरे फैसलों से बचें। लव पार्टनर के साथ संयम से बात करें।

कन्या

नौकरी-पेशा हैं तो सहकर्मियों के साथ बहुत अच्छा तालमेल रहेगा। कारोबारियों को नए ग्राहकों से जुड़ने का मौका और लाभ मिलेगा। लव लाइफ बेहद रोमांटिक रहेगी।

तुला

दफ्तर में आपके काम का लोहा माना जाएगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी। व्यापार में पुरानी योजनाओं से अच्छा लाभ मिलेगा। पार्टनर के साथ गलतफहमियां खत्म होंगी।

वृश्चिक

प्रॉपर्टी या रियल एस्टेट के काम में लाभ मिलेगा। व्यावसायिक मित्रों की सलाह से अटके काम पूरे होंगे। पारिवारिक माहौल खुशनुमा रहेगा। आय के साधन बनेंगे।

धनु

दफ्तर में काम का दबाव अधिक रह सकता है। व्यापारिक फैसलों में वरिष्ठों की सलाह जरूर लें। घर-परिवार में किसी बात पर वैचारिक मतभेद हो सकता है।

मकर

आपके पराक्रम और काम की चौतरफा तारीफ होगी। अटका हुआ पैसा वापस मिलने से व्यापार सुदृढ़ होगा। पारिवारिक जीवन में मधुरता रहेगी। ऊर्जावान महसूस करेंगे।

कुम्भ

आपके आकर्षक स्वभाव से कार्यक्षेत्र में नए अवसर मिलेंगे। बिजनेस में नई तकनीक का इस्तेमाल फायदेमंद रहेगा। पार्टनर के साथ सुखद और यादगार पल बिताएंगे।

मीन

नौकरी में खुद के बलबूते पर बड़ी सफलता हासिल करेंगे। कारोबारी हैं तो नए प्रोजेक्ट्स शुरू करने के लिए दिन अच्छा है। लव पार्टनर के साथ भावनात्मक जुड़ाव गहरा होगा।

मेरी वजह से राइज एंड फॉल 2 शो में हुई शहजाद पूनावाला की एंट्री : स्वरा भास्कर

स्वरा भास्कर की वीरेंद्र सहवाग के रियलिटी शो राइज एंड फॉल 2 में बतौर कंटेस्टेंट एंट्री हो चुकी है। मजेदार बात यह है कि शनिवार, 26 सितंबर से शुरू हुए इस रियलिटी शो में शामिल होने से पहले ही, स्वरा ने शो के दूसरे कंटेस्टेंट शहजाद पूनावाला के साथ अपनी राइवलरी को सुर्खियों में ला दिया है। स्वरा ने शहजाद को ट्रोल बताया और कहा कि वो शो में उनकी वजह से हैं।

स्वरा भास्कर ने राइज एंड फॉल 2 में एंट्री से पहले एक इंटरव्यू में यह भी कहा कि उनके लिए यह फैसला आसान नहीं था, क्योंकि उन्हें अपनी तीन साल की बेटी राबिया से करीब छह हफ्ते दूर रहना होगा। उन्होंने बिग बॉस 20 को ठुकराने की वजह भी बताई और समझाया कि उन्हें राइज एंड फॉल 2 का कॉन्सेप्ट क्यों पसंद आया। स्वरा ने सलमान खान के ट्रोलिंग और पपाराजी कल्चर के खिलाफ हालिया बयान पर भी खुलकर बात की।

स्वरा भास्कर के लिए 26 सितंबर को राइज एंड फॉल 2 में शामिल होना काफी मुश्किल फैसला था। तीन साल की बेटी की मां होने के नाते उन्हें शो में हिस्सा लेने के लिए बेटी के जन्मदिन के कुछ दिन बाद ही उसे पीछे छोड़ना पड़ा। छह हफ्ते तक राबिया से दूर रहने के फैसले पर स्वरा ने कहा, मेरा दिमाग पूरी तरह से उलझा हुआ है। मुझे सच में खुद को मनाना पड़ा और काफी जद्दोजहद करनी पड़ी। इन तीन सालों में शायद ही तीन दिन ऐसे रहे होंगे जब मैं रात भर उससे दूर रही हूं। शो स्वीकार करने से पहले मुझे सच में खुद से समझौता करना पड़ा। मैंने इसे एक चुनौती के तौर पर लिया और सोचा कि अब वह तीन साल की हो गई है, तो शायद हम दोनों एक-दूसरे से थोड़ा अलग होना शुरू कर सकते हैं, और मुझे धीरे-धीरे काम पर लौटना चाहिए। मैंने पिछले साल पति पन्नी पंगा किया था, और मैंने एक छोटा सा तरीका निकाला है- अगर मैं हर साल एक रियलिटी शो करती हूं, तो इससे मुझे बाकी साल के लिए काफी आसान शेड्यूल मिल जाता है, जिससे मैं राबू के साथ ज्यादा समय बिता सकती हूं।

अदाकारी के बाद संजय मिश्रा ने थामी कलम

संजय मिश्रा ने अपनी अदाकारी से दर्शकों के बीच अच्छी जगह बनाई है। सपोर्टिंग भूमिकाओं के जरिए भी उन्होंने खूब नाम कमाया है। हाल ही में उन्हें भक्षक में अपने किरदार के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस बीच अभिनेता ने अपनी किताब का एलान किया है। अभिनेता संजय मिश्रा ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए अपनी किताब को लेकर जानकारी दी है। यह दरअसल, अभिनेता की आत्मकथा होगी। इस आगामी ऑटोबायोग्राफी में वे अपनी जिंदगी और करियर से जुड़ी अनकही कहानियों, संघर्षों, अनुभवों और सीखों को साझा करेंगे। किताब का नाम हम सीखते-सीखते रह गए है। संजय मिश्रा की यह किताब नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला में लॉन्च होगी, जिसका आयोजन जनवरी 2027 में होगा। संजय मिश्रा ने यह किताब अपने दिवंगत पिता शंभू नाथ मिश्रा को समर्पित की है। संजय मिश्रा ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट शेयर किया है। इसके साथ लिखा है, सड़क से उठकर रजत कमल तक के सफर में क्या खोया, क्या पाया, पता नहीं, लेकिन पापाजी, आपके संजयवा को जब संजय शंभूनाथ मिश्रा कहकर मंच पर बुलाया गया, तब आप मेरे साथ थे। मेरी आंखों में आंसू बनकर।

महाकाव्य श्री रामायण कथा में वानर को लगा चश्मा

अंजलि अरोड़ा की फिल्म महाकाव्य श्री रामायण कथा शुक्रवार 25 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है। यह फिल्म जहां अपने ट्रेलर लॉन्च के बाद से ही चर्चा और विवादों में रही है, वहीं अब इसकी नए सिरे से फजीहत हो रही है। सोशल मीडिया पर इस फिल्म की एक तस्वीर खूब सकुलेट हो रही है, जिसे देखकर आप भी अपना सिर पीट लेंगे। एक यूजर ने गौर किया कि फिल्म में सुग्रीव के साथ जो वानर सेना दिखाई गई है, उसमें से एक ने आंखों पर चश्मा लगा रखा है। अब त्रेता युग की कहानी में आंखों पर नजर का चश्मा देखकर फिल्म और इसके मेकर्स की खिल्ली उड़ रही है। भगवान राम और सीता की कहानी पर वैसे तो छोटे पर्दे से लेकर बड़े पर्दे तक, कई बार फिल्म और सीरियल बने हैं। लेकिन जाहिर तौर ऐसी भारी भूल या यह कहें कि ऐसी भद इससे पहले कभी नहीं पिटी है। महाकाव्य श्री रामायण कथा ऐसे समय में भी रिलीज हुई है, जब रणबीर कपूर और साई पल्लवी की रामायणम् भी दिवाली के मौके पर रिलीज होने वाली है। सोशल मीडिया महाकाव्य श्री रामायण कथा तब से चर्चा में है, जब से इसकी घोषणा हुई थी। पहले तो यूजर्स फिल्म में सीता मां के रोल में अंजलि अरोड़ा की कास्टिंग पर बिफर गए थे। लेकिन अब रिलीज के बाद अपनी कास्टिंग, विजुअल इफेक्ट्स और प्रोडक्शन क्वालिटी को लेकर सुर्खियों में है। सोशल मीडिया पर फिल्म की ये नई झलक देख लोगों का सिर घूम गया है। सुग्रीव वाले एक पोस्टर में इंसानी रूप में दिखाए गए एक वानर को मेकर्स ने नजर का चश्मा पहना दिया।

गोविंदा की गर्लफ्रेंड कोमल रानी ने पत्नी सुनीता पर लगाए गंभीर आरोप

बॉलीवुड इंडस्ट्री के हीरो नंबर वन गोविंदा की शादीशुदा जिंदगी एक बार फिर विवादों में है। गोविंदा और सुनीता के रिश्ते की अनबन घर की चार दीवारियों से निकलकर अब खबरों की हेडलाइन्स बन गई है। गोविंदा बीते दिनों अपनी को-एक्ट्रेस और रूमर्ड गर्लफ्रेंड कोमल रानी स्वर्णकार संग लालबागचा राजा के दर्शन करने पहुंचे थे। दोनों ने साथ में बप्पा के दर्शन के किए और आशीर्वाद लिया था, जिसके बाद से दोनों की डेटिंग की खबरों ने तूल पकड़ लिया था।

गोविंदा को कोमल संग देखकर सुनीता ने अपना गुस्सा निकाला था। सुनीता ने कोमल का नाम लिए बिना कहा था कि उनके जीवन में भी कुछ राक्षस हैं। सुनीता ने काली माता से प्रार्थना की थी कि जो लोग उनका घर तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, मां उसका नाश करें।

सुनीता की बातों का अब गोविंदा की रूमर्ड गर्लफ्रेंड कोमल रानी स्वर्णकार ने जवाब दिया है। कोमल ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर पोस्ट शेयर करके सुनीता को खरी-खोटी सुनाई है।

कोमल रानी स्वर्णकार ने अपनी पोस्ट में सुनीता का नाम लिए बिना लिखा-जो औरत अपने ही पति को सालों से जान से मारने की कोशिश कर रही हो, ऐसी औरतों की बद्दुआएं किसी को नहीं लगतीं। घर तोड़ने वाली का टैग मिलने पर कोमल ने पलटवार करते हुए कहा-जो घर पहले से टूटा हुआ हो, उसे कोई दोबारा नहीं तोड़ सकता। कोमल ने खुद पर उठ रहे सवालों पर ऐतराज जताया और सलाह दी कि पूरी बात और हालात जाने बिना किसी के भी दावों पर यकीन नहीं करना चाहिए।

कोमल ने आगे सुनीता पर सवाल उठाते हुए लिखा-मुझे समझ नहीं आता कि एक औरत किस तरह के दर्द से गुजर रही है, जहां वो उस दर्द से उबरने के बजाए उसपर पब्लिकली बात कर रही है। यह सच में दुख-दर्द है या फिर कोई सोची-समझी साजिश?

कोमल आगे लिखती हैं- एक मर्द को लगातार मानसिक तौर पर हैरेस करना, उसे काम करने से रोकाना, उसे जबरदस्ती घर में बैठाना, उसे लोगों से दूर करके अकेला कर देना... उसे मौत को गले लगाने पर मजबूर कर देना...मुझे नहीं लगता कि कोई भी अच्छी और समर्पित पत्नी अपने पति के साथ इतना बुरा बर्ताव कर सकती है। कोमल ने सुनीता के निजी मामलों को पब्लिकली उछालने की मंशा पर भी सवाल उठाए हैं। कोमल ने यह भी दावा किया कि सुनीता लोगों कि सिंपैथी पाने के लिए गोविंदा संग अपने रिश्ते को पब्लिकली उछालती हैं। कोमल ने सुनीता से कहा कि वो अपने निजी एजेंडे के लिए उनके नाम का इस्तेमाल करना बंद करें। उन्होंने यह कहते हुए अपनी बात खत्म की- ईश्वर हर शरीफ आदमी को ऐसी चालाक औरतों से सुरक्षित रखे। कोमल रानी की पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। कोमल के दावों ने फैंस को हैरान कर दिया है। हालांकि, कोमल की पोस्ट पर अब तक सुनीता आहूजा का कोई रिएक्शन सामने नहीं आया है। देखने वाली बात होगी कि सुनीता अपने ऊपर लगे आरोपों का कब और कैसे जवाब देती हैं।

कालकाजी व जमुई केस पर कृति सेनन ने सुनाई खरी-खरी

बीते महीने रक्षाबंधन के ऐड में कृति सेनन के कपड़ों पर हुआ विवाद तो आपको याद होगा ही। तब समाज की सोच पर दो टूक बात करने वाली कृति सेनन अब एक बार फिर चर्चा में हैं। बिहार के जुमई, समस्तीपुर, बांका और यूपी के बदायूं में लड़कियों से छेड़छाड़ और मॉरल पुलिसिंग पर अब 36 साल की एक्ट्रेस ने तीखा प्रहार किया है। कृति ने इंस्टाग्राम पर पितृसत्ता, महिलाओं के प्रति नफरत और महिलाओं की पसंद पर होने वाली आलोचना से जुड़ी एक स्टोरी री-शेयर की है। यही नहीं, उन्होंने एक अन्य पोस्ट को भी लाइक किया, जिसमें महिलाओं के खिलाफ हिंसा और सेलिब्रिटीज के कपड़ों पर होने वाली आलोचना के बीच फर्क पर सवाल उठाया गया था। सोशल मीडिया पर कृति सेनन की यह चहलकदमी ऐसे वक्त में भी है, जब दिल्ली में कालकाजी मंदिर के पास रेप की वारदात से हर कोई सन्न है। एक्ट्रेस ने अपनी तरफ से इंस्टा स्टोरी पर कुछ नहीं लिखा, लेकिन उनकी यह स्टोरी और पोस्ट-लाइक चर्चा में है। रक्षाबंधन ऐड पर हुई आलोचना पर भी कृति ने दो टूक शब्दों में सवाल उठाने वालों को करारा जवाब दिया था। हालांकि, बाद में ब्रांड ने वह ऐड हटा लिया। लेकिन कृति अपने स्टैंड पर कायम रहीं। कृति ने सोशल मीडिया पर एक ऐसी पोस्ट री-शेयर की है, जिसमें महिलाओं और पुरुषों के बीच की लड़ाई वाली सोच को खारिज किया गया है। पोस्ट में लिखा था, दोस्तों, यह पुरुषों बनाम महिलाओं की लड़ाई नहीं है।

अब ज्योतिष भविष्य के साथ बताएगा सुधार

आधिकारिक तौर पर समीर मेधज एस्ट्रो ऐप लॉन्च

» सरोजनी नगर विधायक राजेश्वर सिंह और पूर्व कैबिनेट मंत्री महेंद्र सिंह ने की शुरूआत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आम लोगों को अब ज्योतिष अब भविष्य ही नहीं बताएगा बल्कि उनके जीवन में सुधार लाने के लिए मार्ग दर्शन भी करेगा। इसके लिए उत्तर प्रदेश में एक शानदार कार्यक्रम में समीर मेधज एस्ट्रो ऐप को आधिकारिक तौर पर लॉन्च किया गया। मेधाज ग्रुप के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. समीर त्रिपाठी द्वारा शुरू किए गए इस डिजिटल ऐप का उद्घाटन उनके जन्मदिन पर किया गया।

ऐप को मुख्य अतिथि राजेश्वर सिंह (लखनऊ के सरोजनी नगर से विधायक) और महेंद्र सिंह (उत्तर प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री) ने आधिकारिक तौर पर उतारा। इस लांचिग अवसर पर भारी संख्या में लोग मौजूद रहे। इस लांचिंग पर विधायक राजेश्वर सिंह व पूर्व कैबिनेट मंत्री ले कहा कि प्राचीन भारतीय ज्योतिषीय ज्ञान एवं आधुनिक डिजिटल तकनीक का यह संगम निश्चित रूप से सभी के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। उन्होंने इसे लिए मंगलकामनाएं दीं। इस ऐप के जरिये यूज़र्स पर्सनलाइज्ड कुंडली, रोजाना पंचांग, ग्रहों के गोचर की जानकारी और व्यवस्थित ज्योतिषीय उपाय देख सकते हैं। यह ऐप गूगल प्ले स्टोर पर डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

समीर मेधराज को मिलीं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

आज आशियाना में समीर मेधराज एस्ट्रो ऐप के भव्य शुभारंभ समारोह में पूर्व कैबिनेट मंत्री महेंद्र सिह, एडीजी लॉ एंड ऑर्डर एवं एसटीएफ अमिताभ यश, बड़े भैया रामेश्वर सिंह जी, वरिष्ठ समाजसेवी शिव शंकर अवस्थी , विधायक प्रतिनिधि अजीत सिंह, डॉ. संजीव अवस्थी, शैलेंद्र सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सभी ने समीर मेधराज को इस नवीन पहल हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

ज्योतिष भविष्य बताने के लिए नहीं, बल्कि सुधार के लिए : समीर त्रिपाठी

लॉन्च के बाद ऐप में बारे में मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. समीर त्रिपाठी ने विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कि यह ऐप इस सोच पर काम करता है कि ज्योतिष भविष्य बताने के लिए नहीं, बल्कि सुधार के लिए है। इसका मकसद पारंपरिक वैदिक ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर व्यावहारिक और जीवन को बेहतर बनाने वाली सलाह देना है।

ऐप में मुख्य फीचर्स

एलपीयू मामले में महिला आयोग ने डीसी-एसएसपी से मांगी रिपोर्ट

» डीजीपी बोले- किसी को नहीं बख्शेंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जालंधर। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी और चितकारा यूनिवर्सिटी में छात्राओं से जुड़ी दो अलग-अलग संवेदनशील घटनाओं पर पंजाब राज्य महिला आयोग ने कड़ा रुख अपनाया है। कथित दुष्कर्म और छात्रा द्वारा आत्महत्या के इन मामलों की गंभीरता को देखते हुए आयोग ने स्वत: संज्ञान लिया है। पंजाब राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष राज लाली गिल ने बताया कि आयोग ने संबंधित जिला प्रशासनों डिप्टी कमिश्नर और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों से पूरी घटना की विस्तृत रिपोर्ट तलब की है।राज लाली गिल ने कहा कि हमने दोनों विश्वविद्यालयों में हुई इन घटनाओं का स्वत: संज्ञान लिया है और जिला प्रशासन को जल्द से जल्द रिपोर्ट सौंपने के निर्देश दिए हैं।

सूत्रों के अनुसार, महिला आयोग इन मामलों की परिस्थितियों, विश्वविद्यालय प्रबंधनों द्वारा की गई त्वरित कार्रवाई और पुलिस प्रशासन के रुख की बारीकी से जांच करेगा ताकि पीड़ितों को न्याय दिलाया जा सके। छात्र प्रदर्शन के बीच डीजीपी गौरव यादव खुद स्थिति का जायजा लेने एलपीयू पहुंचे। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को हिंसा और कानून-व्यवस्था बिगाड़ने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। डीजीपी ने कहा कि मामले में दोषी पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा, चाहे वह कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो।

मुख्य चुनाव आयुक्त के आगरा आवास पर कालिख पोती

» कांग्रेस ने गद्दार बताकर मांगा इस्तीफा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

आगरा। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के विजय नगर कॉलोनी स्थित पैतृक आवास पर सोमवार सुबह कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के संगठन महासचिव अनिल यादव और मथुरा के जिला अध्यक्ष मुकेश धनगर के नेतृत्व में करीब 11 बजे प्रदर्शनकारी हाथों में बैनर लेकर पहुंचे। प्रदर्शनकारियों ने आवास के गेट पर कालिख पोत दी और काले पेंट से 'ज्ञानेश कुमार गद्दार हैं' लिख दिया। इसके बाद कुछ देर तक नारेबाजी करते हुए मुख्य निर्वाचन आयुक्त के इस्तीफे की मांग की। प्रदर्शन के दौरान मौके पर पुलिस फोर्स मौजूद नहीं था। प्रदर्शनकारी कुछ देर नारेबाजी करने के बाद वहां से चले गए।

उनके जाने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और गेट पर पोती गई कालिख व लिखे गए शब्दों को साफ कराया। पुलिस अब इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हो रहे फोटो और वीडियो के साथ आसपास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज के आधार पर प्रदर्शनकारियों की पहचान करने में जुटी है। पैतृक आवास पर प्रदर्शन के बाद आगरा महानगर कांग्रेस के नेताओं ने सुभाष पार्क से कलेक्ट्रेट तक विरोध प्रदर्शन किया। इसमें मथुरा से आए कांग्रेस पदाधिकारी और संगठन महासचिव अनिल यादव भी शामिल रहे। प्रदर्शनकारियों ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त के खिलाफ नारेबाजी की और अपनी मांगों को लेकर विरोध जताया।

महाकाल की नगरी में सड़क पर संग्राम

» शाही मस्जिद पर बवाल, उज्जैन में तनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

उज्जैन। महाकाल की नगरी में सिंहस्थ की तैयारियां सड़क से निकलकर अब सियासत और कानून व्यवस्था के मोर्चे तक पहुंच गई हैं। 2028 के सिंहस्थ को लेकर कंठाल चौराहे से गोपाल मंदिर तक सड़क चौड़ीकरण की कार्रवाई के बीच शाही मस्जिद का प्रभावित हिस्सा हटाने को लेकर आज विवाद अचानक उग्र हो गया। पुलिस और प्रदर्शनकारियों में टकराव के बीच पथराव हुआ। आंसू गैस के गोले चले।

अब मामला केवल सड़क की चौड़ाई का नहीं रह गया है। सड़क चौड़ीकरण की जद में आने वाले धार्मिक स्थल को लेकर स्थानीय लोगों की आपत्ति प्रशासन की कार्रवाई और अदालत में चल रही कानूनी लड़ाई तीनों एक ही समय पर आमने सामने हैं।रविवार की रात से ही शाही मस्जिद के आसपास लोगों की भीड़ जमा होने लगी थी।

प्रशासन ने लोगों को समझाने की कोशिश की लेकिन आज सुबह पुलिस ने कुछ लोगों को मौके से हटाया भी लेकिन बाद में फिर भीड़ जुट गई। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक कुछ लोगों ने मस्जिद परिसर की ओर जाने की कोशिश की जिसके बाद पुलिस और भीड़ के बीच तनाव बढ़ा और पथराव शुरू हो गया। मौके पर पुलिस आरएएफ और एसटीएफ की तैनाती की गयी है। इससे पहले भी इलाके में भारी सुरक्षा बल के साथ फ्लैग मार्च किया गया था। मुस्लिम समुदाय के लोग रात से ही शाही मस्जिद परिसर और आसपास की सड़कों पर इकट्ठा होने लगे और नारेबाजी करने लगे। यह विरोध रविवार रात तक जारी रहा। आवाजाही रोकने के लिए कंथल गोपाल मंदिर मार्ग पर बैरिकेड लगाए गए और ड्रोन कैमरों से निगरानी की गई।

पथराव के बाद आंसू गैस के गोले छोड़े

स्थिति बिगड़ने पर पुलिस ने भीड़ को तितर बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़े। रिपोर्टों में क्राइम ब्रांच की महिला टीआई पुष्पा पांचाल के घायल होने की भी जानकारी सामने आई है। उधर मस्जिद के प्रभावित हिस्से को लेकर विरोध कर रही मुस्लिम महिलाओं ने नाका नंबर-5 पर सड़क पर बैठकर चक्का जाम किया जिससे यातायात भी प्रभावित हुआ। प्रशासन का तर्क है कि सिंहस्थ 2028 के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की आवाजाही को देखते हुए शहर की प्रमुख सड़कों को चौड़ा करना जरूरी है। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के 9 सितंबर के आदेश में भी सरकार की ओर से सड़क चौड़ीकरण को यातायात और सिंहस्थ के दौरान भीड़ प्रबंधन से जोड़कर रखा गया था। यानी प्रशासन इसे विकास और यातायात व्यवस्था का हिस्सा बता रहा है जबकि विरोध कर रहे लोग धार्मिक स्थल के प्रभावित हिस्से को लेकर आपत्ति जता रहे हैं।

शिवसेना पार्षद की जमानत रद्द

» सुप्रीम कोर्ट ने कहा- तीन दिन में करें सरेंडर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को डॉक्टरों पर कथित हमले के मामले में शिवसेना पार्षद रमेश म्हात्रे को मिली जमानत रद्द कर दी। मामला महाराष्ट्र के ठाणे जिले के एक नगर निगम अस्पताल में डॉक्टरों पर कथित हमले से जुड़ा है। कोर्ट ने म्हात्रे को तीन दिन के भीतर आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया।

न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने महाराष्ट्र सरकार की ओर से दायर अपील को सुनवाई के लिए स्वीकार कर लिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा, संदेश जोरदार और स्पष्ट रूप से जाना चाहिए कि मेडिकल बिरादरी को छुआ नहीं जा सकता। वे लोगों की सेवा करते हैं और इस तरह उन पर हमला नहीं किया जा सकता। अदालत ने कहा कि म्हात्रे की घटना के बाद इसी पार्टी से जुड़ी ऐसी ही एक और घटना सामने आई थी।

तिरुवनंतपुरम में कोहली ने लगाई रिकार्डों की झड़ी

» विराट के 139 रनों की बदौलत वेस्टइंडीज को पहले वनडे भारत ने 8 विकेट से हराया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। विराट कोहली ने वेस्टइंडीज के खिलाफ तिरुवनंतपुरम वनडे में अपने बल्ले से ऐसा तूफान मचाया कि रिकॉर्ड्स की झड़ी लग गई। कोहली ने 119 गेंदों में 139 रन की पारी खेली। इस दौरान उन्होंने वनडे में 15 हजार रन पूरे किए। उनसे पहले सचिन तेंदुलकर ने 18,426 रन बनाए हैं। भारत में कोहली के वनडे रनों की संख्या 7006 हो गई है। वह किसी एक देश में 7000 वनडे रन बनाने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज बने। उन्होंने सचिन तेंदुलकर के भारत में बनाए 6976 रनों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ा।

कोहली ने रविवार को वनडे की एक पारी में नौ छक्के लगाए। यह इस प्रारूप में उनका सर्वाधिक छक्कों का आंकड़ा है। इससे पहले उनका सर्वश्रेष्ठ आठ छक्कों का था। वेस्टइंडीज के खिलाफ कोहली का शतक लिस्ट-ए क्रिकेट में उनका 60वां शतक था। इसके साथ ही उन्होंने सचिन तेंदुलकर के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। दोनों के नाम अब इस प्रारूप में 60-60 शतक हैं। कोहली ने तिरुवनंतपुरम में तीन वनडे पारियों में 338 रन बनाए हैं और इस दौरान एक बार भी आउट नहीं हुए। किसी मैदान पर बिना आउट हुए बल्लेबाज के सबसे ज्यादा वनडे रन का यह रिकॉर्ड है। भारतीय टीम ने कोहली और कप्तान शुभमन गिल के शतकों की मदद से वेस्टइंडीज पर आठ विकेट से जीत दर्ज की। भारत ने इस तरह तीन मैचों की वनडे सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है। भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। वेस्टइंडीज ने जस्टिन ग्रीव्स के शतक की मदद से 50 ओवर में सात विकेट पर 295 रन बनाए। ग्रीव्स ने 101 रन बनाए। भारत की ओर से कुलदीप ने चार विकेट झटके। जवाब में कोहली और गिल ने शतक लगाए जिसकी मदद से भारत ने 41.4 ओवर में दो विकेट पर 300 रन बनाकर जीत दर्ज की। गिल ने 110 रन की पारी खेली।

एशियन गेम्स: बिना टॉस के सेमीफाइनल में पहुंचे भारत और पाकिस्तान

निशिन। भारत और अफगानिस्तान के बीच एशियन गेम्स 2026 पुरुष क्रिकेट का क्वार्टर फाइनल बारिश की वजह से बिना टॉस हुए रद्द हो गया। लगातार खराब मौसम और मैदान की स्थिति के कारण मैच को रद्द करना पड़ा। इसके साथ ही भारतीय टीम ने सेमीफाइनल में जगह बना ली। इससे पहले भी इस वेन्यू पर पाकिस्तान और हॉन्गकॉन्ग के बीच क्वार्टर फाइनल मुकाबला बिना टॉस के रद्द हुआ था। मैदान की स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैच शुरू कराया जा सके। अधिकारियों के पास मुकाबले को छोटा करके कराने का भी कोई व्यावहारिक मौका नहीं बचा और आखिरकार मैच को रद्द करने का फैसला किया गया। वहीं, अफगानिस्तान के लिए यह बेहद निराशाजनक अंत रहा। टीम ने ग्रुप चरण में खेलकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई थी, लेकिन भारत के खिलाफ नॉकआउट मुकाबला बारिश की भेंट चढ़ गया। इस तरह भारत और अफगानिस्तान के बीच मुकाबला एक बार फिर मैदान पर तय नहीं हो सका और भारतीय टीम नियमों के आधार पर अगले दौर में पहुंच गई।

क्या से क्या हो गये देखते-देखते

शुभांकर मिश्रा का सेक्सी दवाइयों के बाद, कंडोम का इतिहास...

» पत्रकारिता से कंडोम तक पहुंचा पॉडकास्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। शानदार पत्रकार कुछ व्यूज के लिए सेक्सी दवाइयों का प्रचार करे और फिर कंडोम की स्टोरी बताए तो दुख तो होता ही है। जी हां शुभांकर मिश्रा अब नये अवतार में हैं और थोड़े से व्यूज और चेहरा चमकाने की ख्वाहिश ने उन्हें पत्रकारिता के निम्म स्तर पर पहुंचा दिया है। जिस जमाने में बेरोजगारी, महंगाई और गिरती अर्थव्यवस्था से आम जन परेशान है उसी जमाने में वह कंडोम की कहानी सुना रहे हैं और अपने पॉडकास्ट के जरिये सेक्सी दवाओं का प्रचार कर जेब गर्म कर रहे हैं।

व्यूज की भूख ने बदल दिया एजेंडा

शुभांकर मिश्रा के गिरते स्तर को देखकर यह कयास लगना मुश्किल है कि वह कहां पर जाकर रूकेंगे। एक दौर था जब कैमरा हाथ में आता था तो सत्ता से सवाल निकलते थे। बेरोजगारी पर सवाल महंगाई पर सवाल भ्रष्टाचार पर सवाल व्यवस्था पर सवाल और लोकतंत्र के बड़े मुद्दों पर बहस होती थी। फिर दौर बदला। टीवी से डिजिटल आया। डिजिटल से यूट्यूब आया। यूट्यूब से पॉडकास्ट आया और पॉडकास्ट के साथ आया व्यूज का गणित। अब सवाल यह नहीं कि खबर कितनी बड़ी है। सवाल यह हो गया है कि थंबनेल कितना बड़ा चलेगा इसी बदले हुए डिजिटल दौर में पत्रकार से कंटेंट क्रिएटर बनने की यात्रा करने वाले शुभांकर मिश्रा का नया कंटेंट बहस के घेरे में है। शुभाकंर मिश्रा के हालिया अपलोड वीडियो में वह कंडोम का इतिहास बता रहे हैं। शुभाकंर इस बातपर चर्चा कर रहे हैं कि वह पहना कैसे जाता था। वीडियो में उनके डायलाग उनकी स्क्रिप्ट यहां लिखने लायक नहीं है व्यूज के लिए व्यक्ति कितने घटिया स्तर तक उतर सकता है यह इस वीडियो में देखा जा सकता है।

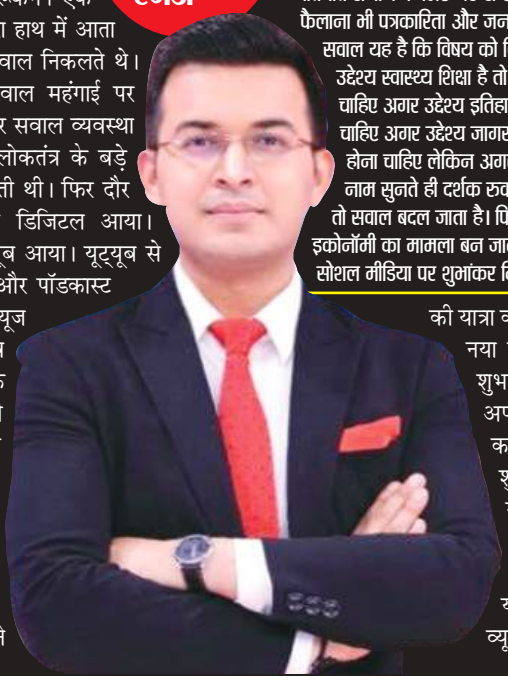

अब सवाल यह है कि पत्रकारिता की प्राथमिकताएं आखिर बदल क्यों रही हैं। कंडोम का इतिहास जानना अपने आप में कोई अपराध नहीं है। सेक्स एजुकेशन और रिप्रोडक्टिव हेल्थ जैसे विषय समाज के लिए जरूरी हैं। लेकिन जब कोई पत्रकार अपनी पहचान अपने पुराने पत्रकारिता प्रोफाइल और अपनी पहुंच के साथ ऐसा कंटेंट पेश करता है तो सवाल उठना भी स्वाभाविक है कि यह पत्रकारिता है जानकारी है मनोरंजन है या वायरलिटी की रणनीति।

क्लिक का लालच

आज की डिजिटल दुनिया में एक बहुत खतरनाक बीमारी फैल चुकी है और वह है क्लिक का लालच। थंबनेल से सनसनी शीर्षक में उत्तेजना और वीडियो में ऐसा विषय जिसे देखते ही अंगूठा स्क्रीन पर रुक जाए फिर व्यूज आते हैं कमेंट आते हैं ट्रोल आते हैं और एल्गोरिद्म मुस्कुराता है लेकिन पत्रकारिता इस पूरी एक्सरसाइज पर सिवाए आंसू बहाने के कुछ नहीं कर सकती। शुभांकर मिश्रा का मामला इसलिए चर्चा में है क्योंकि वह कोई अनजान सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर नहीं हैं। उनका चैनल राजनीति सामाजिक मुद्दे इंटरव्यू और विभिन्न समसामयिक विषयों पर लंबे समय से कंटेंट करता रहा है। सोचिए जो कभी भारत चीन पर बात करता था अब कांडोम का इतिहास बता रहा है।

असली सवाल कंडोम नहीं कंटेंट है

यहां एक बात साफ कर देना जरूरी है कि कंडोम कोई प्रतिबंधित विषय नहीं है सेक्स एजुकेशन कोई गुनाह नहीं है रिप्रोडक्टिव हेल्थ पर बातचीत समाज के लिए जरूरी है स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर जागरूकता फैलाना भी पत्रकारिता और जनसंचार का हिस्सा हो सकता है लेकिन सवाल यह है कि विषय को किस संदर्भ में पेश किया गया अगर उद्देश्य स्वास्थ्य शिक्षा है तो उसके साथ वैज्ञानिक जानकारी होनी चाहिए अगर उद्देश्य इतिहास है तो उसके साथ इतिहास होना चाहिए अगर उद्देश्य जागरूकता है तो उसके साथ सार्वजनिक हित होना चाहिए लेकिन अगर उद्देश्य सिर्फ इतना है कि विषय का नाम सुनते ही दर्शक रुक जाए क्लिक करे और वीडियो चल पड़े तो सवाल बदल जाता है। फिर यह पत्रकारिता से ज्यादा कंटेंट इकोनॉमी का मामला बन जाता है। और यही वह जगह है जहां सोशल मीडिया पर शुभांकर मिश्रा की आलोचना हो रही है।

पत्रकार से कंटेंट क्रिएटर अब कंडोम का इतिहास

शुभांकर मिश्रा के नए पॉडकास्ट पर सोशल मीडिया में बहस तेज हो चुकी है। सवाल यह नहीं कि विषय गलत है सवाल यह कि पत्रकारिता की प्राथमिकता क्या है। पत्रकारिता और कंटेंट क्रिएशन के बीच की दीवार वैसे भी काफी पतली हो चुकी है। कैमरा वही है माइक्रोफोन वही है सामने बैठा इंसान वही है और स्क्रीन के दूसरी तरफ बैठा दर्शक भी वही है। लेकिन फर्क एक चीज ने पैदा किया है एल्गोरिद्म आज खबर की अहमियत कई बार उसके सामाजिक प्रभाव से नहीं उसके क्लिक की क्षमता से तय होने लगी है कितने लोग देखेंगे कितने लोग शेयर करेंगे कितने लोग कमेंट करेंगे कितने लोग विवाद करेंगे और सबसे बड़ा सवाल कितने लोग पहली पांच सेकेंड में वीडियो छोड़कर नहीं जाएंगे यही डिजिटल पत्रकारिता की नई चुनौती है और इसी चुनौती के बीच शुभांकर मिश्रा का नया कंटेंट सोशल मीडिया पर सवालों के घेरे में है। उनके वीडियो में कंडोम के इतिहास पर चर्चा की गई है। शुरुआत ही इस सवाल से होती है? कि पहला कंडोम कैसा था कहां था और कैसे इस्तेमाल होता था आइए जानते हैं। अब इसके बाद सोशल मीडिया ने अपना काम शुरू कर दिया। किसी ने इसे सूचना कहा किसी ने इसे गैरजरूरी बताया किसी ने सवाल किया कि पत्रकारिता की प्राथमिकता क्या होनी चाहिए और किसी ने इसे महज व्यूज के लिए चुना गया विषय बताया।

तेज लहरों में उन्हें सीख मिलती है : राहुल गांधी

» नेता प्रतिपक्ष के तैरने और उथल-पुथल का जिक्र करने वाले पोस्ट ने खींचा ध्यान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर एक रहस्यमयी पोस्ट की। उन्होंने समुद्र की तेज लहरों में तैरने का जिक्र करते हुए कहा कि इससे उन्हें सीख मिलती है कि उथल-पुथल भी एक तरह की शांति होती है। राहुल गांधी ने 'एक्स' पर लिखा, मुझे समुद्र में तब तैरना पसंद है, जब लहरें तेज हों। इससे यह सीख मिलती है कि उथल-पुथल भी शांति का ही एक रूप है।

राहुल गांधी ने इस पोस्ट में इसके पीछे कोई संदर्भ या वजह नहीं बताई। उनका यह बयान ऐसे समय आया है, जब चुनाव आयोग के कामकाज और मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर राजनीतिक विवाद चल रहा है। 'इंडियन एक्सप्रेस' की 23 सितंबर की रिपोर्ट के मुताबिक, चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने एसआईआर से जुड़े फैसलों और आदेशों पर पिछले 10 महीनों में कम से कम 14 बार औपचारिक आपत्ति दर्ज कराई थी। रिपोर्ट के अनुसार, दोनों चुनाव आयुक्तों का कहना था कि कुछ फैसले उनकी जानकारी के बिना लिए या जारी किए गए। एसआईआर का देशव्यापी काम तीन सदस्यीय चुनाव आयोग की निगरानी में चल रहा है।

रिपोर्ट में मतदाता पंजीकरण, मतदाताओं के नाम हटाने और मतदाता सूची से जुड़े दूसरे मामलों को लेकर दोनों चुनाव आयुक्तों की आपत्तियों का जिक्र किया गया है।हालांकि, चुनाव आयोग ने शनिवार को कहा कि एसआईआर से जुड़े सभी फैसले मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और दोनों चुनाव आयुक्तों की सहमति से लिए गए थे। राहुल गांधी इससे पहले चुनावों में कथित वोट चोरी का मुद्दा भी उठा चुके हैं। उन्होंने चुनाव प्रक्रिया में गड़बड़ी के आरोप लगाए हैं और कहा है कि सामने आई मीडिया रिपोर्टों से उनके आरोपों की पुष्टि हुई है। चुनाव आयोग ने राहुल गांधी के इन आरोपों को खारिज किया है।

ज्ञानेश कुमार को लेकर राहुल गांधी के कई आरोप

इससे पहले राहुल गांधी ने एक खबर का हवाला देते हुए मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर भी आरोप लगाए थे। उन्होंने केरल कांग्रेस की एक पोस्ट साझा करते हुए दावा किया था कि केरल के पूर्व मुख्य सचिव जीजी थॉमसन के मुताबिक, ज्ञानेश कुमार ने उनसे संपर्क किया था और उन्हें भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ने तथा मंत्री पद दिलाने की पेशकश की थी। इस दावे पर ज्ञानेश कुमार की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई थी।

दिल्ली व एनसीआर में रेप की घटनाओं पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

» शीर्ष अदालत ने लिया स्वतः संज्ञान लिया

» कहा -इस तरह की घटनाओं के लिए जिम्मेदारी तय होनी चाहिए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली के आस्था कुंज में गैंगरेप की घटना का स्वत: संज्ञान लेते हुए सख्त टिप्पणी की है। कोर्ट ने कहा कि इन घटनाओं से 2012 के निर्भया कांड की दर्दनाक समानताएं सामने आती हैं। जस्टिस जेबी पारदीवाला की बेंच ने स्वत: संज्ञान लेते हुए कहा कि ये घटनाएं कानून-व्यवस्था लागू करने वाली एजेंसियों की विफलता को स्पष्ट रूप से उजागर करती हैं।

गौरतलब है कि दिल्ली के आस्था कुंज में एक नाबालिग के साथ गैंगरेप की घटना के बाद कानून-व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े हुए थे।कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर की रेप की घटनाओं पर कहा कि सार्वजनिक स्थानों, जिनमें पार्क और बसें शामिल हैं वहां रोशनी की अपर्याप्त व्यवस्था, कमजोर निगरानी और अन्य प्रशासनिक सुविधाओं की कमी के कारण उच्च जोखिम वाले क्षेत्र बनने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। कोर्ट ने कहा कि केवल एकजुटता व्यक्त करना पर्याप्त नहीं है।। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ये जरूरी है कि इस मामले में आवश्यक जवाबदेही तय की जाए। कोर्ट ने इस मुद्दे पर स्वत: संज्ञान का मामला दर्ज करने का निर्देश दिया गया। गौरतलब है कि राजधानी दिल्ली के आस्था कुंज पार्क में 17 वर्षीय किशोरी से सामूहिक दुष्कर्म के मामला सामने आया था। इसमें मामले में गिरफ्तार आसिफ, हेमंत और मुकेश को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। गौरतलब है कि अगस्त में भी दिल्ली-एनसीआर में चलती बस में एक नाबालिग से रेप की घटना हुई थी। करीब 47 किलोमीटर तक चलती बस के दौरान लड़की से रेप किया गया। इस दौरान न तो पुलिस की नजर पड़ी न ही बस को किसी नाके पर रोका गया।

यूपीआई से पेमेंट देने वालों को राहत नहीं

» सुप्रीम कोर्ट का केंद्र के फैसले पर रोक लगाने से इनकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केंद्र सरकार के उस फैसले पर रोक लगाने से इनकार कर दिया, जिसके तहत 15 अक्टूबर से 2,000 रुपये से ज्यादा के कुछ खास यूपीआई पर्सन-टू-मर्चेंट ट्रांजैक्शन पर एमडीआर लगाया जाना है।

हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने दो हजार से ज्यादा के यूपीआई पेमेंट पर एमडीआर लगाने को चुनौती देने वाली याचिका पर केंद्र और अन्य से जवाब मांगा है। केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि गेटवे का इस्तेमाल करने वाले 96 प्रतिशत लोग इससे छूट प्राप्त हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह मामला कानूनी से ज्यादा तकनीकी है और केंद्र व अन्य को चार हफ्ते के भीतर अपना जवाब (काउंटर एफिडेविट) दाखिल करने का निर्देश दिया।

92 गवाह मुकर गए तो निष्पक्ष सुनवाई कैसे हुई : सुप्रीम कोर्ट

» सोहराबुद्दीन केस में बरी आरोपियों और सीबाआई को नोटिस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सोहराबुद्दीन शेख कथित फर्जी एनकाउंटर मामले में 21 पुलिसकर्मियों सहित 22 आरोपियों को बरी करने के बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट सुनवाई हुई। अदालत ने मामले की सुनवाई करते हुए नोटिस जारी किया है। सुप्रीम कोर्ट ने CBI और हाई कोर्ट से बरी किए गए 22 आरोपियों को नोटिस जारी किया है।

28 अक्टूबर को इस मामले पर अगली सुनवाई होगी। सोहराबुद्दीन शेख के भाई रूबाबुद्दीन शेख ने बाम्बे हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। 92 गवाहों के मुकरने पर सुप्रीम कोर्ट ने अहम टिप्पणी की है। सीजेआई ने का, वह कुछ महत्वपूर्ण गवाहों के बयानों की जांच करना चाहते हैं। पूरे रिकॉर्ड को तलब नहीं किया जा रहा है, बल्कि संबंधित पक्ष 3-4 ऐसे गवाहों के बयान पेश करें, जिन्हें वे सबसे अहम मानते हैं। कोर्ट आरोपियों को बरी किए जाने के फैसले की जांच करेगी। हालांकि, आदेश के एक हिस्से, विशेष रूप से पैराग्राम 43 की समीक्षा अदालत नहीं करेगी। सुनवाई के दौरान जस्टिस जॉयमाल्या बागची ने 92 गवाहों के मुकरने को गंभीर चिंता का विषय बताया।

उन्होंने कहा कि यह भी विचारणीय है कि मामले में निष्पक्ष और न्यायपूर्ण सुनवाई हुई थी या नहीं। सीजेआई ने कहा कि अदालत इस मामले में सीमित रिकॉर्ड के आधार पर अहम पहलुओं की जांच करेगी और सभी दस्तावेजों को तलब करने की बजाय जरूरी गवाहों के बयानों पर ध्यान देगी।

पिछले साल हाई कोर्ट ने दिखाई थी हरी झंडी

7 मई 2026 को बाम्बे हाईकोर्ट ने निचली अदालत के फैसले को बरकरार रखा था। बाम्बे हाईकोर्ट कोर्ट ने निचली अदालत द्वारा कुल 22 आरोपियों की रिहाई को सही ठहराया है। आरोप है कि साल 2005 में गैंगस्टर सोहराबुद्दीन शेख और पत्नी कौसर बी को फर्जी एनकाउंटर में पुलिस ने मार दिया था। सीबीआई कोर्ट ने दिसंबर 2018 में सबूतो के अभाव मे आरोपियों को बरी कर दिया था।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा